चतुर्थ श्रीमती कांतिदेवी जैन अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला में मुख्य अतिथि के रूप में असम के राज्यपाल माननीय श्री गुलाबचंद कटारिया जी का 'भारतवंशियों की युवा पीढ़ी एवं सांस्कृतिक समन्वय' विषय पर भाषण

दिनांक 21 सितंबर 2023, गुरुवार	**समय : 6:00 PM**	**स्थान : राजभवन, असम (वर्चुअल)**

- राज्यसभा के पूर्व महासचिव डॉ. योगेंद्र नारायण जी,
- सेंट्रल युनिवर्सिटी ऑफ ओडिसा के कुलपति प्रो. चक्रधर त्रिपाठी जी,
- विश्वप्रसिद्ध कथाकार श्रीमती दिव्या माथुर जी,
- वैश्विक महिला मंच की संरक्षक डॉ. दुर्गा सिन्हा जी,
- सुप्रसिद्ध कवि एवं लेखक श्री पीयुष श्रीवास्तव जी,
- त्रिनिदाद एवं टुबैगो में भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव डॉ. शिव कुमार निगम जी,
- श्रीमती कांति देवी जैन मेमोरियल ट्रस्ट के सम्मानित सदस्यगण
- व्याख्यानमाला के आयोजक सस्थानों के सदस्यगण
- इस वर्चुअल सेमिनार से जुड़े अन्य विशिष्ट लोग,

नमस्कार।

'भारतवंशियों की युवा पीढ़ी एवं सांस्कृतिक समन्वय', एक ऐसा विषय है, जो वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में न केवल ज्वलंत मसला है, बल्कि यह हर भारतीय से जुड़ा है। खासकर जो लोग सनातन संस्कृति और भारतीय पंरपरा से जुड़े हैं, उनके लिए इससे बेहतर विषय और कुछ हो ही नहीं सकता। इस विषय पर चर्चा की शुरुआत होते ही सभी के जेहन में विदेशों में रहने वाले भारतवंशी, उनकी संतति और भारतीय संस्कृति कौंध उठता है। साथ ही यह सवाल भी एक चुनौती बनकर सामने आता है कि ग्लोबल विलेज के दौर में नये सिरे से उनसे सांस्कृति तालमेल कैसे स्थापित हो। भौगोलिक दृष्टि से विभिन्न कारणों से दूर जा बसे लोग हमारे जीवन का पहले की तरह हिस्सा कैसे बनें।

दरअसल, यह विषय आज के दौर में अहम इसलिए भी है कि भारत सहित विश्व समाज तेजी से बदल रहा है। बदलाव की इस आंधी में युवा पीढ़ी खुद की सभ्यता, सनातन संस्कृति और पारंपरिक मूल्यों को दूर होती जा रही है। खासकर वे युवा जिनके माता-पिता या उनके पुरखे सदियों या दशकों पूर्व विदेशों में जाकर बस गए। उन्हें भारतीय संस्कृति से जोड़े रखना आज की जरूरत है। ग्लोबल विलेज के दौर में अब इस मसले पर सर्वमान्य राय बनती दिखाई देने लगी है कि भारतीय सनातन परंपरा और उनके मूल्य सबसे पुरानी है।

भारतवंशी युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति गर्व करने से कुछ हद तक विमुख इसलिए हुए हैं कि हमारा देश सदियों तक दासत्व से जकड़ा रहा। इसलिए एकतरफा युवाओं को दोषारोपित करना सही नहीं होगा। ऐसा भारतीय सभ्यता, इतिहास, हमारे शासन और विभिन्न दौर में भारत किस-किसके अधीन शासित रहा उसका नतीजा है। यही वजह है कि आज युवा जो भारतीय परंपरा से अलग–अलग कारणों से कट गए, उन्होंने धर्म, आस्था और समर्पण की भावना पर सवाल खड़े करने शुरू कर दिए हैं, जबकि यह बातें केवल आध्यात्मिक मात्र से संबद्ध नहीं है। यह हमें मानसिक और शारीरिक तौर पर मजबूत भी बनाती हैं। उन्हें यह बताने की जरूरत है कि भारतीय संस्कृति की मानव सभ्यता के दौर में अहमियत क्या है, हम लोग इससे दूर कैसे हो गए?

अब आप कहेंगे यह आप कैसे कह सकते हैं। यहां पर मेरा तर्क है कि मानव सभ्यता किसी भी दौर में क्यों न हो, वो अपने इतिहास और उसके मूल्य बोध से पूरी तरह विमुख नहीं हो सकता। किसी भी राष्ट्र के विकास के एजेंडे में वहां संस्कृति महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आपकी खुद की पहचान ही जीवन में आपके अस्तित्व और दुनिया में आपकी अहमियत का अहसास लोगों को कराती है।

यही वो विषय है, जो भारतवंशियों को भारतीय धरा पर रहने वालों से जुड़ने के लिए प्रेरित करती हैं। भारतीय नागरिकों, जो दूर जाकर बस गए, उन्हें अपनों की याद दिलाता है। यह एक ऐसा पहलू है, जो दोनों के बीच ब्रिज का काम करती हैं। यह हमारे बीच साझा दृष्टिकोण, साझे मूल्यों, साझे लक्ष्यों और समान प्रथाओं के एक समूह का प्रतिनिधित्व भी करता है।

यह हमारी संस्कृति और रचनात्मकता सहित लगभग सभी आर्थिक, सामाजिक और अन्य गतिविधियों में प्रकट भी होती हैं। भारत आज भी दुनिया भर में अपनी सांस्कृतिक बहुलता और सामूहिकता, शांति, सौहार्द, पारिवारिक व्यवस्था, त्याग और विविधता में एकता के लिए जानी जाती है।

भौगोलिक दूरी और आवासीय पृष्ठभूमि में परिवर्तन के कारण भारतवंशी की युवा पीढ़ी और मूल भारतीय संस्कृति के बीच सांस्कृतिक समन्वय' दुरुह जरूर बना दिया है, लेकिन यह इतना भी कठिन नहीं है। इंटरनेट, डिजिटल क्रांति, कंप्यूटर, लैपटॉप, टैबलेट, इंटलेक्चुअल प्रॉपर्टी राइट, सरल और सहज आवागमन साधनों ने इस काम को पहले की तुलना काफी सरल बना दिया है।

विज्ञान और मानव विवेक ने इंसान को वहां ला खड़ा किया है, जहां भारतीय मूल के लोग चाहे कहीं भी क्यों न रहते हों, एक वेब आधारित कार्यक्रम की सोच भर से आपस में जुड़ सकते हैं। वैचारिक आदान प्रदशन कर सकते हैं। इस काम में बाधा आने वाली आर्थिक दुश्वारियों को ऑनलाइन बैंकिंग सिस्टम के जरिए समाधान निकाल सकते हैं।

साहित्यिक और अन्य विषयों से संबंधित तथ्यों और कागजातों का आदान प्रदशन घर बैठे कर सकते हैं। यही वजह है कि भारतवंशियों का मुद्दा एक बार फिर चर्चा का विषय बन गया है। इसकी चर्चा अब आम जीवन के लोकाचार से लेकर सरकारी तंत्र पर एक समान देखा जा सकता है।

भारतवंशी दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा प्रवासी समूह है। गिरमिटिया व्यवस्था के तहत भारतीयों के पहले बैच को पूर्वी प्रशांत और कैरेबियाई द्वीपों में गिरमिटिया मजदूरों के रूप में ले जाया गया था। उसके बाद से प्रवासी भारतीयों की संख्या कई गुना बढ़ गई है। आज 25 मिलियन से अधिक भारतीय विदेश में रहते हैं। दुनिया के सभी प्रमुख महाद्वीपों में फैले हुए हैं। अमेरिका, यूएई, ब्रिटेन, दक्षिण अफ्रीका, सऊदी अरब, म्यांमार, श्रीलंका, मलेशिया, कुवैत और कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, मिस्र, सूरीनाम सहित अन्य देशों में भारतवंशी रहते हैं।

दुनिया के करीब 10 देशों में तो वो वहां की राजनीति को सीधे तौर पर प्रभावित करने लगे हैं। अमेरिकी, ब्रिटेन, कनाडियन, गल्फ में रहने वाले प्रवासी भारतीय तो दुनिया भर में अमिट छाप छोड़ने लगे हैं।

जहां तक राजस्थान से संबद्ध रखने वाले प्रवासियों की बात है, देश में कोलकाता से लेकर उत्तर पूर्व तक, मुंबई से लेकर दक्षिण तक, हर जगह व्यापार और अन्य क्षेत्रों में राजस्थानियों की गहरी पकड़ है। देश ही नहीं दुनिया में भी उद्योगपति लक्ष्मी मित्तल, राहुल बजाज, बिड़ला परिवार हो या करी किंग के नाम से मशहूर सर गुलाम नून जैसे कई हस्तियों ने राजस्थान का डंका बजाया है। इसी तरह की बात की जाए तो इसकी महत्ता भी कम नहीं है। यहां के लोगों ने भी देश और दुनिया में अमिट छाप छोड़े हैं। खासकर पूर्वी एशियाई देशों में इसके लोगों की अपनी अलग पहचान है।

भारतवंशी देश के गौरव के प्रतीक हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने देश का प्रतिनिधित्व करते हैं। भारत दुनिया में सॉफ्ट पावर के रूप में स्थापित करने में उनकी भूमिका जगजाहिर है। भारत के राष्ट्रीय हितों की पैरवी करने और भारत के उत्थान में आर्थिक योगदान देने की क्षमता अब अच्छी तरह से मान्यता प्राप्त है।

वैश्वीकरण, मीडिया और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर भारतवंशी युवा अपनी पहचान के सृजन को अलग-अलग तरीके से दुनिया भर में स्थापित भी कर रहे हैं।

याद कीजिए, दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के खिलाफ नस्लीय पूर्वाग्रह को समाप्त करने के लिए महात्मा गांधी के संघर्ष ने समकालीन भारत में रहने वाले प्रवासी भारतीयों के बारे में किंवदंतियों को प्रेरित किया। जैसे-जैसे स्वाधीनता की लड़ाई ने घरेलू स्तर पर जोर पकड़ा, विदेशों में कई भारतीय समुदायों पर इसका प्रभाव पड़ने लगा। अब तो भारत की वैश्विक छवि में तेजी से सुधार हुआ है।

मंत्री और राजनयिक स्तर पर राजनीतिक दबाव और पैरवी के अलावा भारत विभिन्न राज्यों को प्रभावित करने के लिए अपने प्रवासी भारतीयों का उपयोग भी करने लगे हैं। निवेश को बढ़ाना और सुविधाजनक बनाना, औद्योगिक विकास को तेज़ करना और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और पर्यटन दोनों को बढ़ाने के साथ एक–दूसरे से नये सिरे जुड़ने में भी अहम साबित हो रहे हैं।

आजादी के बाद के शुरुआती काल में भारत सरकार को चिंता होती थी कि विदेशों में रहने वाले भारतीयों का समर्थन करने से मेजबान देश नाराज हो सकते हैं।

इस सोच की वजह से जब देश आजाद हुआ तो प्रवासी भारतीय अपने अधिकारों की रक्षा की उम्मीद भारत सरकार से नहीं करते थे, यही वजह है कि 1950 के दशक में भारत की विदेश नीति को गैर-हस्तक्षेप के मॉडल के रूप में डिजाइन किया गया था।

लेकिन, राजीव गांधी 1980 के दशक में प्रवासी नीति को बदलने वाले पहले प्रधानमंत्री थे, जिन्होंने विदेशों में रहने वाले भारतीयों से उनकी राष्ट्रीयता की परवाह किए बिना, विदेशी चीनी समुदायों के समान, राष्ट्र-निर्माण पहल में भाग लेने का आग्रह किया। अटल बिहारी वाजपेयी प्रशासन के तहत 2000 के बाद कई लाभकारी नीतियां लागू की गईं, जिनमें भारतीय मूल के व्यक्ति (पीआईओ) कार्ड, प्रवासी भारतीय दिवस, प्रवासी भारतीय सम्मान पुरस्कार, प्रवासी भारतीय नागरिक कार्ड, एनआरआई फंड और भारतीयों के लिए मतदान अधिकार शामिल हैं। विदेश में रहने वाले नागरिक।

2014 के बाद से इसमें और तेजी आई है। वर्तमान शासन ने सकारात्मकता के साथ इस मुहिम को गति प्रदान की है। पीएम मोदी का विदेशी दौरे के दौरान भारतवंशियों से मुलाकात और संवाद उसी का हिस्सा है।

विदेश मंत्रालय ने 2015 में ई-माइग्रेट प्रणाली शुरू की, जिसके लिए सभी विदेशी नियोक्ताओं के डेटाबेस पंजीकरण की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, मोदी सरकार के काल में 'भारत को जानो' (Know India Program) पर जोर दिया जा रहा है।

2004 से विदेश मंत्रालय ने दो हजार से प्रवासी भारतीय युवाओं की भागीदारी के साथ केआईपीके 55 से ज्यादा दौरों का आयोजन किया जा चुका है। "भारत को जानो कार्यक्रम" भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है, जो 18 से 30 वर्ष आयु वर्ग के भारतवंशी छात्रों और युवा पेशेवरों को साथ जोड़ने और अपनी मातृभूमि से जुड़ाव महसूस कराने तथा भारत में होने वाले परिवर्तन से प्रेरित और अभिप्रेरित करने के उद्देश्य से शुरू की गई।

केआईपी का उद्देश्य उन्हें समकालीन भारत की कला, विरासत और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं की जानकारी देने तथा भारत में जीवन के विभिन्न पहलुओं तथा उद्योग, शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, जलवायु एवं बिजली व नवीकरणी ऊर्जा आदि जैसे क्षेत्रों में हुई प्रगति के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देना है।

ये क्रम आगे भी जारी रहा तो तय है कि भारतवंशी चाहे दुनियाभर में कहीं भी क्यों रहें, वो खुद को उसी रूप में पाएंगे, जिस रूप में भारत को विश्व गुरु और सोने की चिड़िया माना जाता था।

दुनियाभर में फैले हर भारतीय उसके करीब पहुंच चुके हैं। ज्ञान, तकनीकी और सोच की उच्चता और समावेशी सिद्धातों के बल पर बहुत जल्द हम वैसा करने में कामयाब होंगे, जैसा ही हमारी योजना है। नई दिल्ली में जी20 शिखर सम्मेलन के दौरान वसुधैव कुटुम्बकम का नारा भी उसी का प्रतीक है। यानी हमारी दिशा सही है और पहले की तरह एक–दूसरे के जीवन का अभिन्न हिस्सा होंगे।

जय हन्द।

धन्यवाद।